अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2025) दिनांक : 14.08.2025

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) देवों की स्थिति।

(ख) मनुष्य की अवगाहना।

(ग) गति-आगति द्वार (शुरू से लेकर तीन विकलेन्द्रिय तक)।

(घ) वेद द्वार।

(ड़) शरीर द्वार।

(च) उपयोग द्वार।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) अज्ञान द्वार।

(ख) संज्ञा द्वार।

(ग) समुद्घात–असमुद्घात मरण द्वार।

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान से प्रारम्भ करके दीपक के उदाहरण तक पूरा लिखें।

(ख) मनःपर्यवज्ञान का स्वामी लिखें।

(ग) श्रुतज्ञान के प्रकारों के नाम बताते हुए एक-एक पंक्ति में सबको समझाएं।

(घ) अवधिज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र बतायें।

(ड़) परोक्ष ज्ञान की परिभाषा बताते हुए मतिज्ञान व श्रुतज्ञान में भेद बताएं।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) श्रुत भावतः सादि–सपर्यवसित कैसे हैं?

(ख) हेतु उपदेश संज्ञा के अधिकारी कौन हैं?

(ग) श्रोता को शब्द का बोध कब होता है?

(घ) धारणा क्या है?

(ड़) स्वयं बुद्ध सिद्ध कौन हैं?

(च) नौ निकाय कौन हैं?

(छ) हीयमान अवधिज्ञान क्या है?

(ज) पारमार्थिक प्रत्यक्ष में कौन से ज्ञान आते हैं?

गीतीका (गुणस्थान दिग्दर्शन)–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) बारहवें गुणस्थान में कितने व कौन से कर्मों का क्षयोपशम निष्पन्न भाव होता है?

(ख) गुणस्थान दिग्दर्शन गीतिका की रचना कब, कहां व किसने की?

(ग) बहुश्रुत पुरूष क्या निर्णय करते हैं?

प्र. 6 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) इग्यारमें.....मांयो रे।

(ख) उपसम.....दबावै रे।

(ग) देश मोह.....मांही रे।

(घ) प्रथम.....होयो रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्न सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें– 30

(क) पच्चीस बोल–पाप के भेद ***अथवा*** श्रावक के बारह व्रत। 3

(ख) चतुर्भंगी–सातवां ***अथवा*** बीसवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–पांचवां ***अथवा*** सतरहवां बोल। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–पुण्य-धर्म आदि एक या दो ***अथवा*** कर्म पर छः द्रव्य नौ तत्त्व। 3

(ड़) कर्म प्रकृति–कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्त ***अथवा*** प्रथम पांच प्रत्येक प्रकृति। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खंड)–हेय-ज्ञेय-उपादेय द्वार ***अथवा*** विशेष गुण। 3

(छ) बावन बोल–चौबीस दण्डकों में लेश्या कितनी ***अथवा*** जीव पदार्थ कितने भाव यावत् मोक्ष पदार्थ कितने भाव। 4

(ज) इक्कीस द्वार–अभाषक ***अथवा*** सम्यक् मिथ्या दृष्टि। 4

(झ) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खंड)–श्रावक चिंतन द्वार ***अथवा*** सप्तभंगी। 3